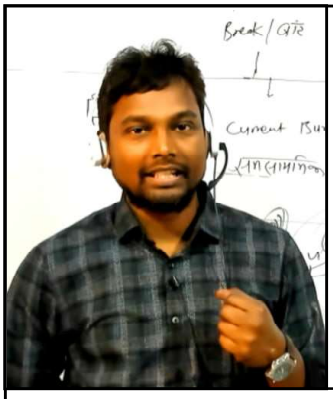

निबंधः "केहू के भंटा बैर, केहू के भंटा पथ"

71st, 72nd BPSC मुख्य परीक्षा के लिए उपयोगी

लेखनः संतोष कश्यप
प्रबंध निदेशक
Bihar Naman GS
An Institute For UPSC & BPSC
www.biharnaman.in

प्रस्तावना

बिहार के भोजपुरी क्षेत्र की लोकप्रिय कहावत "केहू के भंटा बैर, केहू के भंटा पथ" जीवन का एक गहन और प्रेरणादायी सत्य प्रस्तुत करती है। यह लोकोक्ति हमें सिखाती है कि एक ही परिस्थिति, अवसर या संसाधन किसी के लिए लाभकारी रास्ता (पथ) बन सकता है, तो किसी के लिए हानिकारक शत्रु (बैर)। यहाँ "कें" किसी स्थिति या अवसर का प्रतीक है, जिसका परिणाम हमारी सोच, कर्म और दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। यह कहावत हमें आत्ममंथन के लिए प्रेरित करती है और यह संदेश देती है कि हमारा नजरिया ही हमारे जीवन की दिशा तय करता है। यह केवल व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं, बल्कि शिक्षा, परिवार, शिक्षक, रोजगार, राजनीति, खेती, व्यापार और आधुनिक सोशल मीडिया जैसे विविध क्षेत्रों में भी प्रासंगिक है। यह निबंध इस लोकोक्ति के बहुआयामी अर्थ को सरल और प्रभावशाली ढंग से विश्लेषित करता है, जो हमें सकारात्मक सोच और मेहनत के महत्व को समझाता है।

छात्र जीवन इस कहावत का सबसे सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करता है। दो छात्र एक ही विद्यालय में पढ़ते हैं, उन्हें समान शिक्षक, समान पाठ्यक्रम और एक जैसे संसाधन उपलब्ध होते हैं। फिर भी, एक छात्र शिक्षा को अवसर मानकर पूरे मनोयोग से अध्ययन करता है। वह कठिनाइयों को चुनौती के रूप में स्वीकारता है और अपने परिश्रम से उसी शिक्षा को अपने उज्ज्वल भविष्य का मार्ग बना लेता है कृ उसके लिए यह "भंटा पथ" बन जाती है।

दूसरी ओर, दूसरा छात्र शिक्षा को बोझ समझता है, समय को व्यर्थ गंवाता है और लापरवाही तथा असंयम में अपना जीवन खपा देता है। परिणामस्वरूप, वही शिक्षा उसके लिए असफलता का कारण बन जाती है कृ "भंटा बैर" का रूप धारण कर लेती है।

यहाँ अंतर किसी बाहरी परिस्थिति में नहीं, बल्कि दृष्टिकोण और व्यवहार में होता है।

"दो लोग एक ही खिड़की से बाहर देखते हैं कृ एक की नजर कीचड़ पर जाती है, दूसरे की तारों पर।"

यह सूक्ति स्पष्ट करती है कि जीवन में वस्तुएँ समान हो सकती हैं, पर उनका प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि हम उन्हें कैसे देखते हैं। शिक्षा न तो पदजतपदेपबंससल लाभदायक है, न हानिकारक कृ उसका प्रभाव हमारे दृष्टिकोण और प्रयत्नों पर आधारित होता है।

"Your attitude determines your direction-"

छात्र जीवन में यह कहावत न केवल प्रेरणा देती है, बल्कि यह भी सिखाती है कि सफलता किसी सुविधा की मोहताज नहीं, बल्कि सोच और समर्पण की परिणाम होती है। जो छात्र परिस्थितियों में अवसर ढूंढ लेता है, वही जीवन में आगे बढ़ता है।

शिक्षक जीवन के मार्गदर्शक होते हैं, जिनका उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि सोच और चरित्र का निर्माण करना भी होता है। इस लोकोक्ति की सार्थकता शिक्षक के संदर्भ में अत्यंत गहन हो जाती है। सभी छात्रों को एक ही शिक्षक समान रूप से पढ़ाते हैं, एक ही विषय, एक ही समझदारी, एक ही मंच — पर परिणाम एक जैसे नहीं होते।

कुछ छात्र शिक्षक की सख़्ती में सुधार की भावना देखते हैं, उनकी आलोचना में सीखने का अवसर खोजते हैं, और उनके मार्गदर्शन को दीपक मानकर जीवन के अंधकार में उजाला करते हैं। ऐसे छात्र शिक्षक को "भंटा पथ" यानी मार्गदर्शक मानते हैं, और उसी ज्ञान से अपने भविष्य को संवारते हैं।

वहीं दूसरी ओर, कुछ छात्र शिक्षक की कठोरता को अपमान समझ बैठते हैं, आलोचना को व्यक्तिगत हमला मानते हैं, और अपने अहंकार के कारण उस ज्ञान को आत्मसात नहीं कर पाते। ऐसे छात्रों के लिए वही शिक्षक "भंटा बैर" बन जाते हैं — यानी वह तत्व जिससे उन्हें दूरी महसूस होती है।

"औजार अच्छे या बुरे नहीं होते; यह इस पर निर्भर करता है कि उसे थामने वाला उसका प्रयोग कैसे करता है।"

शिक्षक का ज्ञान भी ऐसा ही औजार है — यदि छात्र उसे विनम्रता, जिज्ञासा और श्रमशीलता से ग्रहण करें, तो वह जीवन की राहों को रोशन कर सकता है। अन्यथा वही ज्ञान उपेक्षित रहकर दिशाहीनता का कारण बन जाता है।

"गुरु वही जो अंधेरे में दीप बने, और शिष्य वही जो उस रोशनी में राह खोजे।"

अतः यह स्पष्ट है कि शिक्षक का प्रभाव उनके व्यवहार से नहीं, बल्कि छात्रों की ग्रहणशीलता, दृष्टिकोण, और तैयारी से निर्धारित होता

"BPSC की पूरी और समय पर तैयारी कराने वाला एकमात्र विश्वसनीय संस्थान।"

Copyright@ Bihar Naman GS, Patna

है। एक ही शिक्षक किसी के लिए प्रेरणा बन सकते हैं, तो किसी के लिए बोझ कृ यह इस बात पर निर्भर करता है कि छात्र उन्हें किस दृष्टि से देखते हैं।

माता–पिता वह नींव हैं जिन पर एक बच्चे का संपूर्ण जीवन टिका होता है। वे अपने बच्चों को समान स्नेह, शिक्षा, संस्कार और सुविधाएँ देते हैं कृ लेकिन यह आवश्यक नहीं कि सभी बच्चे उन संसाधनों को समान रूप से आत्मसात करें। यही वह बिंदु है जहाँ यह लोककथ्य उभर कर सामने आता हैः "केहू के भंटा बैर, केहू के भंटा पथ।"

एक ही घर में पले–बढ़े दो बच्चों को एक जैसे अवसर मिलते हैं, पर एक बच्चा माता–पिता की दी गई सीख और अनुशासन को जीवन की दिशा बना लेता है कृ वह पढ़ाई करता है, संस्कारों को अपनाता है, और अपने आचरण से माता–पिता के सपनों को साकार करता है।

"पिता का अनुभव और माँ की ममता, यदि समझ ली जाए तो जीवन की सबसे बड़ी विश्वविद्यालय बन जाती है।"

वहीं दूसरा बच्चा माता–पिता की बातों को टोकाटाकी समझता है, अनुशासन को कैद मानता है, और स्वतंत्रता की गलत परिभाषा में बहक जाता है। नतीजतन, वही संस्कार और स्नेह जो एक के लिए प्रेरणा बना था, दूसरे के लिए विरोध का कारण बन जाता है। "बीज एक ही होते हैं, पर खेत की तैयारी और सिंचाई तय करती है कि फसल कैसी होगी।"

यहाँ "कें" माता–पिता की परवरिश है कृ जो सभी बच्चों को समान रूप से मिलती है। लेकिन किसके लिए वह "पथ" बनती है और किसके लिए "बैर" — यह बच्चों के दृष्टिकोण, संस्कार ग्रहण करने की क्षमता, और कर्मों पर निर्भर करता है।

"माता–पिता की सीख वही समझता है, जो भविष्य की रोशनी में वर्तमान को संवारना जानता है।"

इसलिए, परिवार की दी हुई मूलभूत सीख और परवरिश, अपने आप में निष्पक्ष होती है। लेकिन उसका प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि बच्चा उसे कैसे देखता है कृ एक अवसर के रूप में या एक बोझ के रूप में।

रोजगार केवल जीविका का साधन नहीं होता, बल्कि यह आत्मसम्मान, उद्देश्य और समाज में योगदान का मार्ग भी होता है। एक ही पद, एक ही वेतन और समान कार्यदायित्वों के बीच भी यह देखा गया है कि कुछ लोग अपनी नौकरी को उत्कृष्टता का पथ बना लेते हैं, जबकि कुछ के लिए वही नौकरी दुराचार और असंतोष का कारण बन जाती है। यही वह जगह है जहाँ यह लोककथ्य सटीक बैठता हैः "केहू के भंटा बैर, केहू के भंटा पथ।"

उदाहरण स्वरूप, बिहार पुलिस में नियुक्त दो कर्मचारी लें — दोनों को समान प्रशिक्षण, समान नियमावली और अवसर मिलते हैं। परंतु एक कर्मचारी ईमानदारी, समयबद्धता और कर्तव्यनिष्ठा से कार्य करता है। वह जनता की सेवा को प्राथमिकता देता है और धीरे–धीरे उसकी पहचान एक कर्तव्यनिष्ठ अधिकारी के रूप में बनती है। उसे सम्मान, पदोन्नति और आत्मसंतोष प्राप्त होता है।

"कर्तव्य वह दीपक है, जो अंधेरे में भी रास्ता दिखाता है।"

वहीं दूसरा कर्मचारी नौकरी को केवल आय का साधन मानता है। वह अनुशासन और सेवा की भावना से विमुख होकर रिश्वत, लापरवाही और राजनीति में उलझ जाता है। नतीजतन, वही नौकरी जो एक के लिए आत्मविकास का मार्ग बनी, दूसरे के लिए बदनामी और भ्रष्टाचार का दलदल बन गई।

"नौकरी में बड़ा या छोटा पद नहीं होता, बड़ा होता है आपका नजरिया और नीयत।"

यहाँ "कें" है — एक ही सरकारी नौकरी, जो दो व्यक्तियों के लिए भिन्न–भिन्न अनुभव और परिणाम लेकर आती है। अंतर बस इतना है कि एक ने उसे 'पथ' बना लिया और दूसरे ने 'बैर'।

"काम तो एक ही है, पर उसके साथ किया गया दृष्टिकोण ही उसे साधना या संकट बनाता है।"

यह स्पष्ट करता है कि कोई भी नौकरी — चाहे वह पुलिस सेवा हो, शिक्षा हो, चिकित्सा हो या प्रशासन — स्वयं में निष्पक्ष होती है। परंतु उसका परिणाम कर्मचारी के आचरण, नैतिकता और दृष्टिकोण पर निर्भर करता है।

राजनीति केवल सत्ता की कुर्सी नहीं होती, बल्कि वह जनसेवा की सबसे बड़ी जिम्मेदारी होती है। किन्तु राजनीति का स्वरूप उस पर निर्भर करता है जो उसे साधता है। यही कारण है कि यह लोकोक्ति—"केहू के भंटा बैर, केहू के भंटा पथ"कृराजनीति के क्षेत्र में सबसे अधिक प्रासंगिक प्रतीत होती है।

एक ही लोकतांत्रिक व्यवस्था में पले–बढ़े दो नेता लें। दोनों को समान जनादेश, संसाधन और संवैधानिक शक्तियाँ प्राप्त होती हैं, परन्तु दोनों की दृष्टि और नीयत उसे अलग अर्थ देती है।

पहला नेता राजनीति को स्वार्थ, सत्ता और संपत्ति के साधन के रूप में देखता है। वह केवल चुनाव जीतने के लिए वादे करता है, लेकिन जनता से कट जाता है। उसका उद्देश्य स्वयं को मजबूत करना होता है, समाज को नहीं। ऐसे नेता के लिए वही राजनीति, जो लोककल्याण का पथ बन सकती थी, बदनामी और जनता के आक्रोश का बैर बन जाती है।

"राजनीति में जनता का विश्वास सबसे बड़ा सिक्का होता है, जो टूट जाए तो सारा साम्राज्य भी व्यर्थ है।"

दूसरी ओर, वही व्यवस्था दूसरा नेता पाता है, जो राजनीति को सेवा, दायित्व और उत्तरदायित्व के रूप में देखता है। वह आम जन के बीच रहकर, उनके दुख–सुख में सहभागी बनता है, और अपनी नीतियों से समाज को दिशा देता है। धीरे–धीरे वह एक "जननेता" बन जाता है कृ न सिर्फ पद से, बल्कि व्यवहार और संवेदना से भी।

"सत्ता से नहीं, सेवा से नेता बनते हैं।"

"BPSC की पूरी और समय पर तैयारी कराने वाला एकमात्र विश्वसनीय संस्थान।"

Copyright@ Bihar Naman GS, Patna

यहाँ "कें" है — राजनीति। वही राजनीति जो एक के लिए जनहित का पथ बनती है, और दूसरे के लिए आलोचना और अविश्वास का बैर।

"सोच बदलो, सितारे बदल जाएंगे। नेतृत्व वही टिकता है, जो आत्मा से निकले और जनता के दिल तक पहुँचे।"

इसलिए राजनीति स्वयं न तो अच्छी होती है, न बुरी। वह नेता के विवेक, दृष्टिकोण और कर्मों से रूप लेती है। इस संदर्भ में यह लोकोक्ति जनतंत्र को समझने और समझाने का सरल लेकिन सशक्त सूत्र बन जाती है।

खेती और व्यापार—दो ऐसे क्षेत्र जिनमें समान अवसरों और संसाधनों के बावजूद सफलता और विफलता का फर्क केवल व्यक्ति की सोच, प्रयास और समझदारी पर निर्भर करता है। यही कारण है कि यह लोकोक्ति—"केहू के भंटा बैर, केहू के भंटा पथ"कृखेती और व्यापार दोनों के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।

दो किसानों के पास लगभग समान प्रकार की जमीन, बीज और पानी के संसाधन होते हैं। अकाल या प्राकृतिक कठिनाइयों के समय पहला किसान निराश होकर खेती छोड़ देता है, पलायन कर मजदूरी करने लगता है। वह परस्थितियों को अपनी हार मान बैठता है।

"जहाँ इच्छा होती है, वहाँ रास्ता निकल आता है।"

वहीं दूसरा किसान सूझ–बूझ और ज्ञान से काम लेकर नई तकनीकों, कम पानी वाली फसलों, जैविक खेती और समय के अनुसार खेती के विकल्प चुनता है। वह विपरीत परिस्थितियों में भी मेहनत और समझदारी से लाभ कमाता है। उसके लिए वही खेती सफलता का पथ बन जाती है।

यहाँ 'कें' है खेती—जो एक के लिए अवसरों का पथ है, तो दूसरे के लिए हार का बैर।

दो दुकानदार एक समान व्यवसाय करते हैं, लेकिन उनकी सोच और कार्यशैली उन्हें अलग मुकाम पर ले जाती है। पहला दुकानदार ग्राहक सेवा, विपणन कौशल और मेहनत के साथ अपने व्यापार को बढ़ाता है। वह समय–समय पर नवाचार करता है, ग्राहक की आवश्यकताओं को समझता है और व्यवसाय में विश्वास बनाए रखता है।

"सफलता का मूल मंत्र है — ईमानदारी, मेहनत और नवाचार।"

दूसरा दुकानदार बिना ग्राहक के प्रति सम्मान, योजना और मेहनत के व्यापार करता है। परिणामस्वरूप वह धीरे–धीरे ग्राहकों को खो देता है और अंततः असफल हो जाता है।

यहाँ 'कें' है व्यापार—जो एक के लिए समृद्धि का पथ है, और दूसरे के लिए पतन का बैर।

इस प्रकार, खेती और व्यापार दोनों में सफलता और विफलता का मूल रहस्य हमारे दृष्टिकोण, परिश्रम और बुद्धिमत्ता में निहित है। यह लोकोक्ति हमें यह याद दिलाती है कि परिस्थितियाँ समान होते हुए भी हमारा नजरिया ही हमें आगे बढ़ाता या रोकता है।

"परिस्थितियाँ हमें नहीं, हमारी सोच और कर्म हमें परिभाषित करते हैं।"

आज के डिजिटल युग में सोशल मीडिया हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। यही वह माध्यम है जो किसी के लिए सफलता का मार्ग बन सकता है, तो किसी के लिए समय और अवसरों की बर्बादी।

कुछ लोग सोशल मीडिया का इस्तेमाल अपनी शिक्षा और कैरियर को बेहतर बनाने के लिए करते हैं। वे ऑनलाइन कोर्सेज से ज्ञान बढ़ाते हैं, नेटवर्किंग के जरिए नए अवसर पाते हैं, और कंटेंट क्रिएशन के माध्यम से अपनी आय का स्रोत बनाते हैं। उनके लिए सोशल मीडिया सफलता की सीढ़ी साबित होता है।

"जहाँ चाह, वहाँ राह।"

वहीं, कुछ लोग सोशल मीडिया को केवल मनोरंजन और समय बिताने के साधन के रूप में देखते हैं। वे निरर्थक वीडियो, रील्स और अनावश्यक कंटेंट में उलझकर अपनी ऊर्जा और समय दोनों गंवा देते हैं। परिणामस्वरूप वे न केवल अपने लक्ष्यों से दूर होते हैं, बल्कि मानसिक तनाव और व्यर्थता का शिकार भी बनते हैं।

यहाँ 'कें' है सोशल मीडिया—जो एक के लिए ज्ञान और विकास का पथ है, तो दूसरे के लिए व्यर्थता और असफलता का बैर।

सोशल मीडिया की ताकत और उपयोगिता पूरी तरह हमारे दृष्टिकोण और निर्णयों पर निर्भर करती है। यह हमें सिखाती है किः

"तकनीक का सही उपयोग ही विकास का रास्ता है, अन्यथा वह केवल बर्बादी का कारण बनती है।"

इसलिए, यह जरूरी है कि हम सोशल मीडिया को अपने विकास और सफलता के लिए एक सकारात्मक उपकरण बनाएँ, न कि समय और ऊर्जा की हानि का कारण।

इस प्रकार, इस आधुनिक युग की सबसे महत्वपूर्ण सीख यही है किः

"सोशल मीडिया एक अवसर है, उसे व्यर्थ मत जाने दो—उसे अपने सपनों का रास्ता बनाओ।"

स्वतंत्रता संग्राम के महान संघर्ष में भी यह लोकप्रसिद्ध कहावत अत्यंत सार्थक सिद्ध होती है। जब भारत की आज़ादी के लिए महात्मा गांधी ने सत्य और अहिंसा का मार्ग चुना, तो कई लोग इसे कमजोरियों का परिचायक समझने लगे। आलोचकों ने अहिंसा को असफलता का रास्ता कहा, उन्हें लगा कि केवल ताकत और हिंसा से ही अंग्रेजों को परास्त किया जा सकता है।

परंतु, गांधी जी ने अपने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया। उनका दृढ़ विश्वास था कि सत्य और अहिंसा ही वह "पथ" हैं जो अंततः स्वतंत्रता और न्याय दिलाएंगे। उन्होंने इस पथ पर चलते हुए लाखों भारतीयों को संगठित किया, और विश्व भर में "महात्मा" और "बापू" के रूप में सम्मानित हुए।

"BPSC की पूरी और समय पर तैयारी कराने वाला एकमात्र विश्वसनीय संस्थान।"

Copyright@ Bihar Naman GS, Patna

"जहाँ धीरज और सत्य है, वहाँ विजय निश्चित है।"

यहाँ 'कें' था अहिंसा और सत्य का मार्ग — जो गांधी जी और उनके अनुयायियों के लिए सफलता का पथ बना, जबकि आलोचकों के लिए यह एक अपरिचित और अवांछित 'बैर' था।

स्वतंत्रता संग्राम में यह उदाहरण हमें सिखाता है कि:

"किसी भी संघर्ष में मार्ग और परिणाम हमारी सोच और धैर्य पर निर्भर करता है।"

सत्य और अहिंसा की ताकत ने न केवल भारत को आज़ादी दिलाई, बल्कि पूरी दुनिया के लिए अहिंसा के सिद्धांत को प्रेरणा का स्रोत बनाया।

इस प्रकार, स्वतंत्रता संग्राम में यह लोकोक्ति हमें याद दिलाती है कि:

"जब तक हम सही मार्ग पर अडिग हैं, हमारे लिए असफलता कोई विकल्प नहीं।"

उपसंहार

लोकप्रचलित कहावत "केहू के भंटा बैर, केहू के भंटा पथ" जीवन का एक अटल सत्य है। यह कहावत हमें यह सिखाती है कि कोई भी परिस्थिति, अवसर या संसाधन अपने आप में न तो अच्छा होता है और न ही बुरा। वह हमारी सोच, दृष्टिकोण, मेहनत और ईमानदारी पर निर्भर करता है कि हम उसे किस रूप में देखते हैं और कैसे उसका उपयोग करते हैं।

जीवन के हर क्षेत्रकृचाहे शिक्षा हो, शिक्षक हो, परिवार हो, रोजगार हो, राजनीति हो, खेती–बाड़ी हो, व्यापार हो या आधुनिक तकनीक जैसे सोशल मीडियाकृहमारी सफलता या असफलता का रास्ता इस बात से तय होता है कि हम इन सभी चीज़ों को पथ बनाते हैं या बैर।

यह कहावत हमें प्रेरित करती है कि हम नकारात्मकता से बचें, हर अवसर को समझदारी और सकारात्मकता के साथ अपनाएँ, और अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए पूरी मेहनत और लगन से काम करें। जब हम सोच बदलेंगे, तभी हमारे सितारे भी बदलेंगे। "सोच बदलो, सितारे बदल जाएंगे।" इसलिए, हमें हमेशा अपने दृष्टिकोण को सकारात्मक रखना चाहिए और हर परिस्थिति को अपने लाभ के लिए साधना चाहिए ताकि जीवन में हर "कें" हमारे लिए सफलताओं का रास्ता बने।

"BPSC की पूरी और समय पर तैयारी कराने वाला एकमात्र विश्वसनीय संस्थान।"

Copyright@ Bihar Naman GS, Patna